बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

विशेषांक मदर टेरेसा

अंक-9, वर्ष - 2 | सितंबर-2016 | मूल्य 10/-

घेर लेने को मुझे जब भी बलाएँ आ गईं,
ढाल बनकर सामने माँ की दुआएँ आ गईं।

प्यारे दोस्तो। 'माँ' एक ऐसा शब्द है, जो किसी भी शिशु टूटे फूटे ही सही पर पहली बार अपने मुँह से बोला होगा। माँ शब्द प्यार, स्नेह, ममता, अपनत्व एवं करूणा के भाव से भरा है।

दोस्तो। क्या आपको पता है कि माँ का दिल शरीर के बाहर होता है....? नहीं न! चलिए मैं आपको बताता हूँ, आखिर कैसे....? हमारी माँ, माँ बनने से पहले यह तय कर लेती है कि उनका दिल शरीर के बाहर उनका हाथ पकड़कर चलेगा... इसलिए। अब तो समझ गए।

माँ... जो सिर्फ हमें जन्म ही नहीं देती। वह हमें शीतलता देती है, वह हमें प्यार करना सिखाती है, वह हर मुसीबत के वक्त हमारे साथ खड़ी रहती है , वह अपने नंदलाल की भूख मिटाने के लिए अपनी भूख त्याग देती है। इससे भी बड़ी बात यह कि कुछ नहीं रहने पर भी वह आँचल में अपने लाल को छुपा लेती है, लेकिन सर पे खुली छत नहीं रहने देती।

ऐसी ही माँओं में एक महान थीं-'मदर टेरेसा! देखा दोस्तो इनका स्मरण मात्र से ही दिल स्वच्छ हो उठा। तन-मन निर्मल हो गया। इस वर्ष मदर टेरेसा को संत की उपाधि दी गई। पर क्या आपको नहीं लगता कि उन्हें इस उपाधि की कोई जरूरत ही नहीं है। मदर टेरेसा तो पहले से ही हमारे लिए संत थीं। वो सिर्फ दूसरों के लिए जीती थीं। उनका दिल तो गरीबों, बीमारों, असहायों व लाचारों के लिए धड़कता था। अपना पूरा जीवन सेवा व भलाई में लगा दिया । कई बूढ़े बेसहारा व बेघर बीमारियों से ग्रसित थे। उन्होंने मरीजों के घावों को धोया उनकी मरहम पट्टी की और उनको दवाइयाँ दी। टेरेसा ऐसी मदर थीं जो पाई-पाई अपनी संतानों पर खर्च कर देतीं। उन्होंने नोबेल सम्मान भोज में जाने से भी मना कर दिया और कहा, भोज में लगने वाला पैसा दे दें। ताकि गरीबों के लिए खाना लिया जा सके।

ऐसी ही एक और घटना है- टेरेसा हवाई जहाज से जा रही थीं। फ्लाईट में लोगों के लिए खाना परोसा गया। ज्यादातर लोगों ने थोड़ा खाया, बाकी छोड़ दिया। टेरेसा ने सबका खाना समेट लिया। कहाफ्आप इसे फेंक देंगे। पर हमारे काम आएगा।

तो दोस्तो! हमें भी दूसरों की मदद करनी चाहिए? हम दूसरों को पढ़ाएँ, उनके साथ किताबें शेयर करें, बड़े-बुजुर्गे को सड़क पार कराएँ।

गरीब बच्चों को कुछ कपड़े, खिलौने व मिठाईयाँ दें, तो यही मदर टेरेसा के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। और हाँ दोस्तो! जब भी तुम मुसीबत में होगे-मदर टेरेसा को स्मरण कर, प्रार्थना करना। तुम्हें नई शक्ति मिलेगी।

मदर का एक संदेश है कि खूबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते लेकिन अच्छे लोग हमेशा खूबसूरत होते हैं।

आपका दोस्त
किलकारी लाल सुमन कुमार

प्रेरक प्रसंग

बात 1965 की है। पोप पॉल-6 भारत आए थे।वे मदर टेरेसा से मिलना चाहते थे। इसकी सूचना टेरेसा तक पहुँचाई गई। पर उन्होंने मना करते हुए सहज शब्दों में कहा, - मैं अपनी संतानें की सेवा करने में व्यस्त हूँ। सो, मैं उनसे नहीं मिल पाऊँगी। चूँकि मेरी संतानें मेरे लिए सर्वोपरी हैं। इनसे बढ़कर मेरे लिए और कुछ नहीं। सब महत्वहीन हैं। पोप टेरेसा की बातों से इतने प्रभावित हुए कि वे अपनी कार भेंट कर दी। पर टेरेसा ने इसे भी नीलाम कर, पैसे जुटा लाई ताकि दीन-दुःखियों की पीड़ा दूर कर सकें।

हाइकु

1. संकल्प मेरा
   मदर टेरेसा- सी
   बनूँगी मैं भी।
2. उपाधि मिली
   संत की, पर वे तो
   हैं माँ समान।
3. खून का नहीं
   दिल का रिश्ता-सा है
   माँ टेरेसा से।
4. माँ की ममता
   दुनिया में सबसे
   श्रेष्ठ भाव है।
5. माँ या मदर
   शब्दों से कभी प्रेम
   नहीं आँकते।

प्रियंतरा भारती

प्यारी माँ

माँ तेरे आँचल में मुझे,
सुकून सा मिलता है।
जब तू न होती हो तो,
मन बेचैन- सा लगता है।

विनती है ईश्वर से,
तू हमेशा मेरे साथ हो।
कितनी भी मुसीबत आए,
हमेशा तू मेरे पास हो,

माँ तुम होती हो तो
सारी खुशियाँ मिलती है।
मुरझाए चेहरे पर भी,
झट से हँसी खिलती है।

माँ तुम बड़ी अच्छी हो,
तुम से पूरा संसार है।
तेरे ही आँचल में तो
सारा खुशियों की बहार है।

श्रुति प्रकाश - वर्ग - 6

लिख भेजें हमारे पास

दोस्तो !

बाल किलकारी अखबार 'के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी , कविता, लघुकाथा, चुटकुले पहेली ,चित्र , आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रियाएँ या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें । चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी । हमारा पता इस अंक में है। ढुँढों और अपनी रचनाएँ भेजो।

बाल सम्पादक

घुमा डाला

4 3 2
5 3 5 1 1
6 1 2 8 3 3 1
7 2 8 4 3
9 ? 3

खाली गोले में कौन सा अंक आयेगा।

एहसास

''माँ! मैं स्कूल जा रहा हूँ पर तुम दवाई खा लेना! भूलना मत! वरना तुम्हारी तबीयत और खराब हो जाएगी।'' आदित्य यह कह स्कूल के लिए चल पड़ा। माँ मुस्कुराते हुए बोली, ''ठीक है बेटा, मैं दवा खा लूँगी। तू चिंता मत कर '' अभी आदित्य थोड़ी-ही दूर पहुँचा था कि उसे अचानक याद आया - अरे, आज तो मदर टेरेसा का जन्मदिन है ! मैं तो भूल ही गया था। खैर छोड़ोआज पता नहीं स्कूल में क्या होगा? जब वह स्कूल पहुँचा तो देखकर आश्चर्य चकित रह गया। अरे ये क्या? पूरा स्कूल सजा हुआ है, मदर टेरेसा की एक बड़ी-सी तस्वीर लगी हुई है और सभी बच्चे एक जगह एकत्र होकर बैठे हैं। आदित्य को बहुत खुशी हुई और वह भी उन बच्चों के साथ बैठ गया। सभी शिक्षक बारी-बारी आ रहे थे एवं मदर टेरेसा की प्रेरणाओं से बच्चों को प्रेरित कर रहे थे।

आदित्य ध्यानमग्न होकर सारी बातें सुन रहा था। शिक्षकों ने मदर टेरेसा के बारे में बहुत अच्छी-अच्छी बातें कहीं। पर अब समय भी काफी हो चुका था। इस कारण स्कूल की छुट्टी हो गई। आदित्य तो बहुत खुश था, क्योंकि उसने मदर टेरेसा के बारे में इतनी जानकारी जो प्राप्त कर ली थी। यही सोचते वह घर जा रहा था। तभी उसने देखा कि सड़क के किनारे एक महिला भीख माँग रही है। कुछ लोग तो पैसे देते मगर कुछ ऐसे ही चले जाते। आदित्य को यह देखकर अच्छा नहीं लगा।

ऐसे तो वहाँ वह कई भिखारियों को देखता था पर पता नहीं आज उसे बहुत तकलीफ हुई। जैसे वह एक माँ के दर्द को महसूस कर रहा हो। पर क्यों ये भीख माँग रही है? क्या इनके पास खाने के लिए पैसे नहीं हैं? या कोई और वजह है। ऐसे ही आदित्य के मन में कई सवाल उठने लगे। इन्हीं सवालों को सोचते-सोचते वह घर पहुँचा। माँ ने उसका उदास चेहरा देख उससे पूछा, "अरे आदित्य बेटा, इतने उदास क्यों हो? कहीं फिर तुमने बंटी से लड़ाई तो नहीं की।''''नहीं माँ मैंने उससे लड़ाई नहीं की।'' आदित्य बोला। ''तो फिर कौन-सी बात है जिससे तुम उदास हो।'' माँ ने आदित्य से सवाल किया। ''माँ मैंने आज सड़क पर एक महिला को भीख माँगते देखा। क्यों माँ? वह भीख क्यों माँग रही थी? उनका परिवार नहीं है क्या?'' आदित्य यह कह रो पड़ा। माँ उसे चुप कराती हुई बोली, ''नहीं बेटा ऐसी बात नहीं है। उनका परिवार तो हैं मगर.....।''

''मगर क्या माँ बतलाओ न?''''कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो अपनी खुशियों के लिए माँ को ही भूल जाते हैं। वे यह भी भूल जाते हैं कि माँ ने ही हमें जन्म दिया है, उसी ने पाल-पोसकर बड़ा किया और जब वे बड़े हो जाते हैं तो उनकी कद्र करना भी भूल जाते हैं। उनकी जरूरत कम समझने लगते हैं और अंत में उन्हें बेघर कर देते हैं, बेसहारा की तरह उन्हें छोड़ देते हैं।'' ये बोलकर माँ की आँखों में आँसू आ गए माँ रोते हुए बोली ''आदित्य बेटा! क्या तुम भी बड़े होकर ऐसा ही करोगे ?'' ''नहीं माँ, कभी नहीं। मैं तो हमेशा आपके साथ रहूँगा, आपको छोड़कर कहीं नहीं जाउँगा। मेरा आपके सिवा मेरा और है ही कौन?'' आदित्य यह सारी बातें कह माँ की गोद से लिपट गया।

सम्राट समीर-वर्ग-दशम्

हेडलाईट लगाएँ मछली

दोस्तो हमने समुद्र के बारे में सुना है। समुद्र में लहलहाती लहरें, ऊपर चमचमाती पानी के ऊपर फैली चादर कितनी अच्छी लगती है। दोस्तो! हम लोगों ने कई तरह की मछलियों को देखा और सुना है। लेकिन क्या अपने कभी हेडलाईट लगाए मछली के बारे में सुना है? नहीं न... ? तो आओ, आज मैं तुम्हें इसके बारे में बताता हूँ।

समुद्र में जैसे-जैसे हम नीचे जाते हैं तो अँधेरे भी बढ़ता जाता है। समुद्र की अंदरूनी सतह में इतना अँधेर होता है कि कई मछली टॉर्च का इस्तेमाल करती है। अब आप सोच रहें होंगे कि इनके पास टॉर्च कहाँ से आई। दरअसल इस मछली के सिर पर गेंडे की सींग जैसा पाईप होता है, जिसका अगला सिरा अँधेरे में तेज चकाचौंध भरी रोशनी फैलाती है। यह एंजलर मछली जिसका इस्तेमाल मछलियों को आकर्षित करने में करता है और उनके पास आते ही उनका शिकार कर लेता है।

हर्ष राज-वर्ग - 9

तुम-सा

हर का दुःख हरने वाली,
माँ, वो बड़ी प्यारी थी।
सूरज, चाँद, तारों-सी,
लगती बड़ी न्यारी थी।

वक्त आपा-धामी में,
माँ, वो कहाँ खो गई।
ईश्वर से अब पूछे मैं,
क्यों.... ? ऐसी माँ सो गई।

सूरज तो सुबह-सवेरे,
हर रोज निकलता है।
पर ऐसा माँ का प्यार अब,
कहाँ किसी को मिलता है।

तुम्हारी तस्वीर को देख,
माँ, मिलता मुझे सुकून है।
ऐसा काम करूँगा जरूर,
क्योंकि तुम-सा मुझमें गुण है।

-मुनटुन राज

खेल

छुपा-छुप्पी

चलो छुपा-छुप्पी खेल खेलते हैं। इस खेल में जितने चाहें उतने बच्चे खेल सकते हैं। यह खेल खेलने के लिए अपने घर के आस-पास, या बगीचे में खेल सकते हैं जहाँ छुपने के पर्याप्त एवं सुरक्षित स्थान हो। अब खेल शुरू करते हैं। एक बच्चे की आँख पर एक पट्टी बाँध दें। शेष बच्चों को अलग-अलग जगहों में छुपना है। आँख की पट्टी खोल कर उस बच्चा को अन्य बच्चों को ढूँढ़ने के लिए कहें। जिसे वह सबसे पहले देखकर पकड़ ले उसे अगली बार ढूँढ़ने की जिम्मेदारी दी जाये। इसी प्रकार खेल को आगे बढ़ाएँ। खेलेऔर मजा लें।

झरोखा

लिम्का बुक ऑफ रिकॉड प्रेस कॉन्फ्रेंस में माननीय शिक्षा मंत्री के साथ बच्चे

''चहकोत्सव'' में कार्यक्रम प्रस्तुत करते बच्चे

किलकारी में अभिभावक बैठक

शिक्षक दिवस में नाटक प्रस्तुत करते किलकारी के बच्चे

बूझो तो जानें

1. 80 कोस के पोखरा 84 कोस के घाट, ओकरा में एगो पनडुक प्यासल जाए!
2. पानी में छप- छुप बादल में रेखा, हाए परान तोरा कभी न देखा!
3. राजा की बेटी सोने की चोटी, रात बाढ़े त दिन खोले दिन बाढे त रात खोले!
4. एक चिरईयाँ अट ओकर पाँख दुन्नों पट ओकर खलडी उजार ओकर मास मजेदार!
5. एक चिड़ियाँ ऐसी खूँटा पर बैठी मूट्ठी-मुट्ठी चावल डाले देख चिड़िया कैसी!

संकलन : निशा कुमारी-वर्ग : 8

माँ थी पूरे संसार की

वो दीपक थी, हाँ रातों की,
हर धूप में आँचल छाँव की।
दया, प्रेम की मूरत थी वो,
देवी दुखियों के दुवाओं की।

हाँ, उनका कहना था,
रोगी प्रेम हकदार हैं।
तुम मानव हो तुम प्रेम करो,
वे बेचारे लाचार हैं।

भूखे-प्यासों की निवाला थी,
वो दर्द मलहम थी प्यार की।
हाँ कली थी वो कोमल दिल सी,
माँ थी पूरे संसार की।

दीन-दुखियों की सेवा करना,
था उनका अपना एक पेशा।
हर की सेवा खुद ही करती,
थी ऐसी संत मदर टेरेसा।

अतुल रॉय, वर्ग - दशम्

मदर टेरेसा बनूँगा

सुबह का समय था। क्लासरूम बच्चों के चीं-पों से गूँज रहा था। पहली घंटी बजने में अभी कुछ समय बाकी थे। हल्ला के इस बाजार में नन्दू कहीं और खोया था। उसकी निगाहें खिड़की से नीचे झाँक रही थीं। चीं-चीं-चीं छोटी -सी चिड़याँ चहचहा रही थी। खिड़की के बगल वाले पेड़ पर ही वो छोटा-सा, प्यारा-सा घोंसला बना हुआ था। नन्दू प्रकृति के उस अनोखे -से दृश्य में गुम-सा था। तभी किसी ने बड़ा -सा हथौड़ा चला दिया हो। टन.... इसी के साथ पहली घंटी बजी और इंगलिश की मैम कक्षा में दाखिल हुईं। बच्चों ने पुस्तकें खोलीं। टीचर बोलीं, ''तो बच्चो जल्दी से चैप्टर नम्बर नं 7 और पेज 5 खोलो। आज हम एक ऐसी माँ के बारे में पढ़ेंगे, जिसकी ममता पूरे देश के लिए थी। यानी की मदर टेरेसा।'' टीचर ने चैप्टर पढ़ाना शुरू कर दिया था। पढ़ाने के बाद वे बच्चों से बोली, ''पता है बच्चो। मदर टेरेसा को अभी -अभी संत की उपाधि मिली है। तुमने देखा बच्चो किस तरह एक महिला पूरे जीवन भर नन रहकर, सेवा-भाव से सबकी सेवा की। वो कोई डॉक्टर, इंजीनियर, नहीं बल्कि पूरे इंडिया की मदर बनीं।'' नन्दू ध्यान से सारी बातें सुन रहा था। तभी उसका ध्यान खिड़की से बाहर गया। मौसम खराब हो गया था। बूँदा-बाँदी तेज होने लगी। क्लासरूम की खिड़कियाँ बंद थीं। अरे यह क्या ! बारिश जोरों की होने लगी। नन्दू उसी मस्ती में डूबा हुआ था। टीचर ने बच्चों से पूछा, ''अच्छा बच्चो, तुम बताओ -बड़े होकर क्या बनना चाहते हो?'' सभी बच्चे बता रहे थे। पर नन्दू तो सारी बातों से अनजान कहीं बाहर खोया हुआ था। नन्दू के कानों में टीचर की आवाज गूँजी , ''नन्दू, नन्दू योर चांस।'' नन्दू सकपका कर उठा। टीचर बोलीं, ''जल्दी बताओ क्या बनना चाहते हो?'' पर नन्दू ने सुना जल्दी बताओ क्या पढ़ना चाहते हो? और वह बोला, ''मदर टेरेसा।'' उसने देखा सभी बच्चे तो हँस रहे हैं। टीचर बोलीं, ''शांत हो जाओ बच्चो, इसमें हँसनेवाली क्या बात है?'' टन... ! दूसरी घंटी बजी और टीचर क्लासरूम से बाहर चली गईं। नन्दू को अपनी मूर्खता समझ में आ गई। सबके चेहरों को देख उसे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई। राहुल खिल्ली उड़ाते हुए बोला, ''अरे वाह! नन्दू तू तो मदर टेरेसा बनेगा।'' दूसरा बच्चा बोला, ''अरे नहीं-नहीं फादर टेरेसा।'' नन्दू चुपचाप सर झुकाए बाहर देखने लगा। छुट्टी हुई, बारिश खत्म हो चुकी थी। नन्दू माँ के साथ स्कूल के बाहर जा रहा था। तभी इसी शोर-गुल के माहौल में उसके कानों में सुबह वाली चीं सुनाई पड़ी। पर इस बार आवाज धीमी थी और उसमें थोड़ दर्द छुपा था। ना जाने नन्दू ने क्या सोचा और झट से खिड़की वाले पेड़ के नीचे दौड़ पड़ा। छोटी चिरईया नीचे पड़ी कराह रही थी। ठंड से कँपकपा भी रही थी। शायद बारिश ने उसके घोंसले को तोड़ दिया था। नन्दू हौले से चिरईया को अपने हाथों में उठाया। और उसे अपनी टाई से ढक दिया। सभी बच्चों ने जोरदार ताली बजायी। इंगलिश की टीचर ने कहा, ''नन्दू तुम तो सचमुच मदर टेरेसा बन गए।'' नन्दू ने देखा चिरईया को उसके हाथों में गर्माहट महसूस हुई। और शांति से टाई में लिपटी इधर -उधर देख रही थी। जैसे माँ के पल्लू में कोई रोता हुआ बच्चा चुप हो जाता है।

अभिनंदन गोपाल -कक्षा-8

बहुत कुछ सिखाया है

जिसका कोई पता नहीं,
मदर ने उसे उठाया था ।
रोते -भटकते उस बच्चे को,
टेरेसा ने हाथ बढ़ाया था।

गरीबों को सहारा देकर,
उनका दुख दूर भगाया ।
रोते उस चेहरे को ,
टेरेसा ने हँसना सिखाया है।

ईश्वर से वे कम नहीं,
जिसने जीना सिखाया ।
फूलों-सा-चहकना हरदम,
मदर टेरेसा ने बतलाया।

विष्णु कुमार-वर्ग - 9

कुछ नया करें

माचिस के लोग बनाएँ

चलो कुछ नया बनाते हैं। इसके लिए खाली माचिस की कुछ डिब्बियाँ, सफेद और रंगीन कागज के टुकड़े, गोंद, स्केच पेन या रंगीन पेंसिलें जुगाड़ कर लें।

अब माचिस के दोनों हिस्सों को चित्रानुसार बनायें। उपर के हिस्से पर हल्के रंग का कागज चिपका दें। इस पर चेहरा बनाऐं और उसे रंग दें। बालों को रंग कर या रंगीन कागज चिपका कर बना लें। निचले हिस्से पर भी रंगीन कागज चिपका लें। फिर दूसरे रंग के कागज से अपनी मर्जी के अनुसार कपड़े दर्शाऐं। चेहरे पर लगे कागज के रंग की दो पट्टियों को चिपका कर हाथ बनाऐं। आपका तैयार हो गया माचिस के लोग।

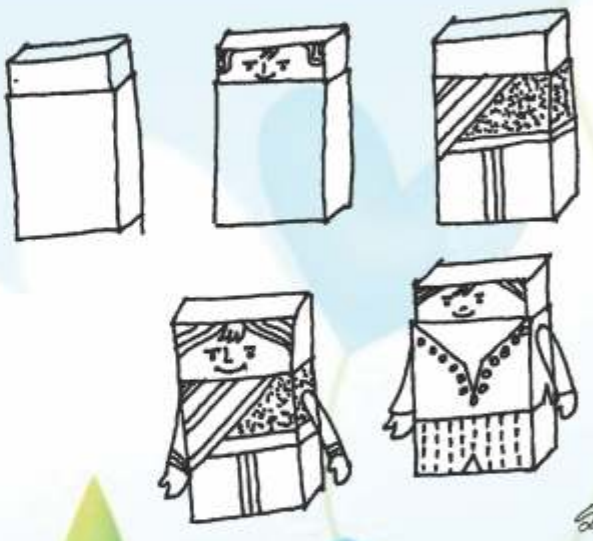

हँसो - हँसाओ

1. एक बच्चा था और एक पुलिस/पुलिस ने बच्चे से कहा कि तुम्हें सुबह पाँच बजे फाँसी होगी। तो बच्चो ने कहा मैं तो उठना ही हूँ 9 बजे हा-हा-हा- हा-....

2. सब्जी बेचने वाले के घर जब बच्चा हुआ तो एक महिला ने कहाँ बधाई हो, बच्चा कैसा है। सब्जी बेचने वाले ने तुरंत जवाब दिया एक दम ताजा है बहन जी।

3. मेरे चाचा का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। क्या वह बहादुर है। नहीं वह गंजा है!

4. एक दिन पत्नी ने पति से कहाँ आप मुझे नाम लेकर मत पुकारा करों इससे बच्चे भी मेरा नाम लेकर पुकारते हैं। तो पति ने झुंझलाकर कहा तो क्या मैं भी तुम्हें बच्चों की तरह मम्मी कहकर पुकारूँ?

संकलन: डॉली कुमारी

इस अंक के रचनाकार -प्रतिभागी- शुभम्, युवराज, खुशबू, नीरा, हर्षराज, तुलसी, रौशन, कृष राज, सुमन,अतुल, सूरज,अकाश,निकिता,तन्नु, विनय,रोहित,गौरव,सूधांशु ,स्वीटी,निशा, डौली, बबली, मुस्कान, युवराज, सौरभ, संजीत
बाल सम्पादक - मुनटुन, प्रवीण,सम्राट, रानी, राहुल, घुँघरु, अभिनंदन, प्रियंतरा,
संयोजक - सुधीर कुमार, विशेष सहयोग - वीरेन्द्र कुमार पाठक
कार्यकारी सम्पादक - राजीव रंजन श्रीवास्तव
सम्पादक - ज्योति परिहार, निदेशक बिहार बाल भवन किलकारी, पटना
कार्यालय - बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब

बूझो तो जानें

शीत, गुलर के फूल, सीक, ईख, जाता

घुमा डाला

हर पंक्ति के बीचो बीच के गोले में आने वाली संख्या शेष गोलें में आने वाली संख्याओं के योग की आधी है। इसलिए 9+3=12/2=6 खाली गोले में 6 अंक आयेगा।

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

नन्हीं तूलिका

संत मदर टेरेसा के बारे में

- मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त, 1910 को मेसिडोनिया की राजधानी स्कोप्जे शहर में हुआ था! उनका जन्म 26 अगस्त को हुआ था पर वह खुद अपना जन्मदिन 27 अगस्त मानती थी! उनके पिता का नाम निकोला बोयाजू और माता का नाम द्राना बोयाजू था।
- मदर टेरेसा का असली नाम 'अगनेस गोंझा बोयाजिजू' था! अगनपेस के पिता उनके बचपन में ही मर गए! बाद में उनका लालन-पालन उनकी माता ने किया! पांच भाई-बहन में वह सबसे छोटी थी और उनके जन्म के समय उनकी बड़ी बहन आच्च की उम्र 7 साल और भाई की उम्र 2 साल थी, दो बच्चे बचपन में ही गुजर गए थे।
- गोंझा एक सुनदर जीवत, अध्ययनशील एवं परिश्रमी लड़की थी! पढ़ना, गीत गाना वह विशेष पसंद करती थी! वह और उनकी बहन आच्च गिरजाघर में प्रार्थना की मुख्य गायिका थी! गोंझा को एक नया नाम 'सिस्टर टेरेसा' दिया गया जो इस बात का संकेत था कि वह एक नया जीवन शुरू करने जा रही है! यह नया जीवन अक नए देश में जोकि उनके परिवार से काफी दूर था! सहज नहीं था लेकिन सिस्टर टेरेसा ने बड़ी शांति का अनुभव किया।
- सिस्टर टेरेसाद तीन अन्य सिस्टरों के साथ आयरलैंड से एक जहाज में बैठकर 6 जनवरी, 1929 को कोनकाता में 'लोरेटो कॉन्वेंट' पंहुचीं! वह बहुत ही अच्छी अनुशासित शिक्षिका थी और विद्यार्थी उन्हें बहुत प्यार करते थे! वर्ष 1944 में वह सेंट मैरी स्कूल की प्रिसिपल बन गई मदर ओंसा ने आश्यक नर्सिंग टेनिंग पूरी की और 1984 में वापस कोलकाता आ गई और वहां से पहली बार कालकाता गई, जहां वह गरीब बुजुर्गो की देखभाल करने वाली संसीा के साथ रहीं! उन्होंने मरीजों के घावों को धोय, उनकी मरहमपट्टी की और उनको दवाइयां दीं।
- वर्ष 1983 में 73 वर्ष की आयु में मदर टेरेसा रोम में पॉप जॉन पॉल द्वितीय से मिलने के लिए गई! वीह उन्हें पहला हार्ट अटैक आ गया! इसके बाद साल 1987में उनहें दूसरा हृदयाघात आया ! लगातार गिरती सेहत की वजह से 05 सितम्बर, 1997 को उनकी मौत हो गई।
- आज भी मदर टेरेसा तब तब उनकी मिशनरी में नजर आती होंगी जब-जब किसी गरीब की भूख मिटती होगी, जब कोई बच्चा खिलखिलाकर हंसता होगा, जब किसी बेसहारे को सहारा मिलता होगा।

मेरी पहली हवाई यात्रा

मैं जो सोचती थी कि जब मैं बड़ी होऊँगी, तब हवाई-जहाज़ पर एक बार जरूर सवार होऊँगी। पर कभी -कभी कुछ ऐसा होता है, जो हमें खुद नहीं पता।

मुझे रात को कॉल आया-किलकारी बिहार बाल भवन से कि मुझे हवाई -जहाज़ की सवारी करके राँची जाना हैं इधर फोन कट उधर मैं उछल पड़ी । मुझे यकीन नहीं हो रहा था , बहुत ज्यादा खुशी और अंदर मे गुदगुदी जैसा महसूस हो रहा था।

आखिर मेरा इंतज़ार खत्म हुआ और अगले दिन दोपहर साढ़े बारह बजे मैं किलकारी आ रही थी लेकिन मन में इतनी खुशी हो रही थी कि पैर साईकल से भी ज़्यादा तेज चल रहे थे। ऐसे में मेरी चप्पल टूट गयी अरे.....अब मैं क्या करती ?एक हाथ में चप्पल और दूसरे हाथ में बैग। जल्दी से किलकारी पहुँची । नेहा जी ने मुझे स्टॉक रूम से एक कोल्हापूरी जूती निकाल कर दी। अफरा-तफरी, हल्ला मचाते हुए ,दौड़ते-भागते और हड़बड़ी में जल्दी से किलकारी की गाड़ी में सवार हुए और निकल गए एयरपोंटके लिए।

अरे....यहाँ तो सबकुछ सचमुच ऐसा लग रहा है जैसे कि हम फिल्मी दुनिया में आ गए हों । और मन में यह गाना चल रहा है....जैसा फिल्मों में होता है, हो रहा है हू ब हू.... । सब कुछ एक दम चका-चक। इसके बाद हम जाँच की प्रक्रिया पूरी कर के हम फाइनली एयरपोर्ट के अन्दर पहुँचे।

हवाई जहाज़ पर चढ़ने के पहले हमें एक बस से हवाई-जहाज़ तक पहुँचाया गया। जिसकी बनावट बहुत ही सुन्दर थी। फिर मैं, अंकिता और संगीता दीदी हवाई -जहाज़ पर सवार हो गए। पहले मुझे लगता था कि हवाई-जहाज़ में सवार होना, मतलब हमें पंख लग जाना-जैसा होगा । लेकिन यहाँ तो जैसे हम एक झूले पर बैठे हों वैसा महसूस हो रहा था। गुदगुदी तो दिल में खूब हो रही थी, पर डर भी उतना ही लग रहा था । मेरी कल्पना से सबकुछ अलग हो रहा था। पहले हवाई-जहाज़ पूरी गति से सीधा चल रहा था। फिर एक दम से ऊपर की तरफ जाने लगा । बिल्कुल जैन्ट विल जैसा फिर दायीं ओर झुकी ,फिर बायीं ओर । जैसे-जैसे यह ऊपर जा रहा था वैसे-वैसे नीचे की दुनिया हमें छोटी दीख रही थी । एक पल तो एसा आया जब मुझे नीचे की दुनिया साइंस मॉडल कीतरह दीख रही थी। और इन्सान तो पता ही नहीं चल रहे थे।

सफर बड़ा ही मज़ेदार था । एक क्षण ऐसा आया है जब नीचे की दुनिया खत्म हो गई और हम एक बादलों की नई दुनिया में समा गए । जहाँ सबकुछ कल्पनाशील था। हम बादलों के बीच थे । हमारे आस-पास केवल बादल,बादलों के पहाड़, बादलों के पेड़ और अलग-अलग तरह की बनावटें। बादलों की गुफाओं को हम चीरते हुए उनमें समाते हुए चले जा रहे थे।

फिर एकदम से हम सूई ....ईं...ईं..से नीचे आ गए । मेरे पेट में बहुत गुदगुदी हुई और हम राँची पहुँच गए।

प्रियस्वरा भारती

माँ, तेरा ही बच्चा हूँ

अँगुली पकड़ बचपन में,
चलना तूने सिखाया।
गलतियों को शरारत समझ,
तूने उन्हें भूलाया।
जब पैर मेरे डगमगा गए,
दिया तूने मेरा साथ।
जब आँखे डबडबा गईं
तब पोंछी मेरी आँख।
तेरे कदम स्वर्ग हैं लगते,
लगता है बस ठहर ही जाऊँ
तेरी प्यास-मिठास को अम्मा,
कभी मैं तो भूल न पाऊँ।
दुनिया चाहे कुछ भी बोले,
मैं तुझ-सा ही सच्चा हूँ।
जितना भी मैं बड़ा हो जाऊँ,
माँ, तेरा ही बच्चा हूँ।

रौशन पाठक-वर्ग - 8

दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई-मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspot.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar